१०. ऐतिहासिक कालखंड

१०.१ संस्कृति किसे कहते हैं ?

१०.२ नदी घाटियों की नगरीय संस्कृति

१०.३ विविध संस्कृतियाँ : मेसोपोटेमिया, इजिप्त, चीन, हड़प्पा

१०.४ खेल और मनोरंजन

दूसरे पाठ में हमने देखा है कि जिस कालखंड का इतिहास लिखने के लिए ग्रंथ, पांडुलिपियाँ आदि द्‌वारा लिखित प्रमाण उपलब्ध होते हैं; उस कालखंड को ऐतिहासिक कालखंड कहते हैं । सभी प्राचीन नगरीय संस्कृतियों में विकसित लिपियों के आधार पर इतिहास का लेखन किया जाता था । इसका अर्थ यह है कि नगरीय संस्कृतियों का उदय होने के साथ-साथ नवाश्म युग का प्रागैतिहासिक कालखंड समाप्त हुआ और ऐतिहासिक कालखंड का प्रारंभ हुआ ।

१०.१ संस्कृति किसे कहते हैं ?

मनुष्य तथा अन्य प्राणियों को अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए अपने आस-पास के परिवेश और प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है । उन आवश्यकताओं को पूर्ण करते समय अन्य प्राणी अपने परिसर और प्रकृति में विशेष परिवर्तन नहीं लाते हैं । जैसे; भालू गुफा में रहता है, वानर पेड़ पर रहता है परंतु मनुष्य मकान बनाता है । इसके लिए मनुष्य अपने परिसर के प्राकृतिक स्वरूप को कुछ मात्रा में परिवर्तित करता है । वह प्रकृति से प्राप्त अन्न भी अन्य प्राणियों की भाँति कच्चा नहीं खाता । वह उस अन्न को पकाता, सेंकता है । कच्चे अन्नपदार्थ पर संस्कार करता है । इस प्रकार वह विभिन्न पदार्थों पर संस्कार करता रहता है । पत्थर, धातु आदि को संस्कारित कर विविध हथियार और वस्तुएँ बनाता है । मिट्‌टी से बरतन, ईंटें और अन्य वस्तुएँ बनाता है । कपास से सूत और सूत से कपड़ा बनाता है । संक्षेप में; प्रकृति से जो प्राप्त होता है; मनुष्य उसके स्वरूप को अपनी आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित कर लेता है । इस प्रकार का परिवर्तन अथवा संस्कार करने के लिए मनुष्य को कौशलों की आवश्यकता होती है । जिस वस्तु की आवश्यकता है; उस वस्तु को बनाने से पूर्व उसके बारे में उसे सोचना पड़ता है । इस प्रकार विचार, कौशल और परिश्रम करने की परंपरा के फलस्वरूप अनेक कलाओं की निर्मिति हुई । इन कलाओं और परंपराओं का ज्ञान प्रत्येक पीढ़ी ने अगली पीढ़ी को सौंपा । इसके लिए विचारों का आदान-प्रदान हुआ । इस आदान-प्रदान के माध्यम से भाषा भी संपन्न होती रही । विविध कलाओं, कौशलों और परंपराओं का कई पीढ़ियों द्‌वारा प्राप्त ज्ञान और उस ज्ञान के आधार पर निर्मित जीवन प्रणाली को 'संस्कृति' कहते हैं ।

१०.२ नदी घाटियों की नगरीय संस्कृति

नवाश्मयुगीन संस्कृति कृषिप्रधान जीवन पर आधारित थी । उत्तम कृषि उत्पादन के लिए उपजाऊ भूमि और बारहोंमाही जलापूर्ति की आवश्यकता होती है । अतः स्वाभाविक रूप से नवाश्मयुगीन मनुष्य ने नदियों के तटों पर गाँव बसाए । इस कारण नदी घाटियों में नवाश्मयुगीन संस्कृतियों का विकास हुआ ।

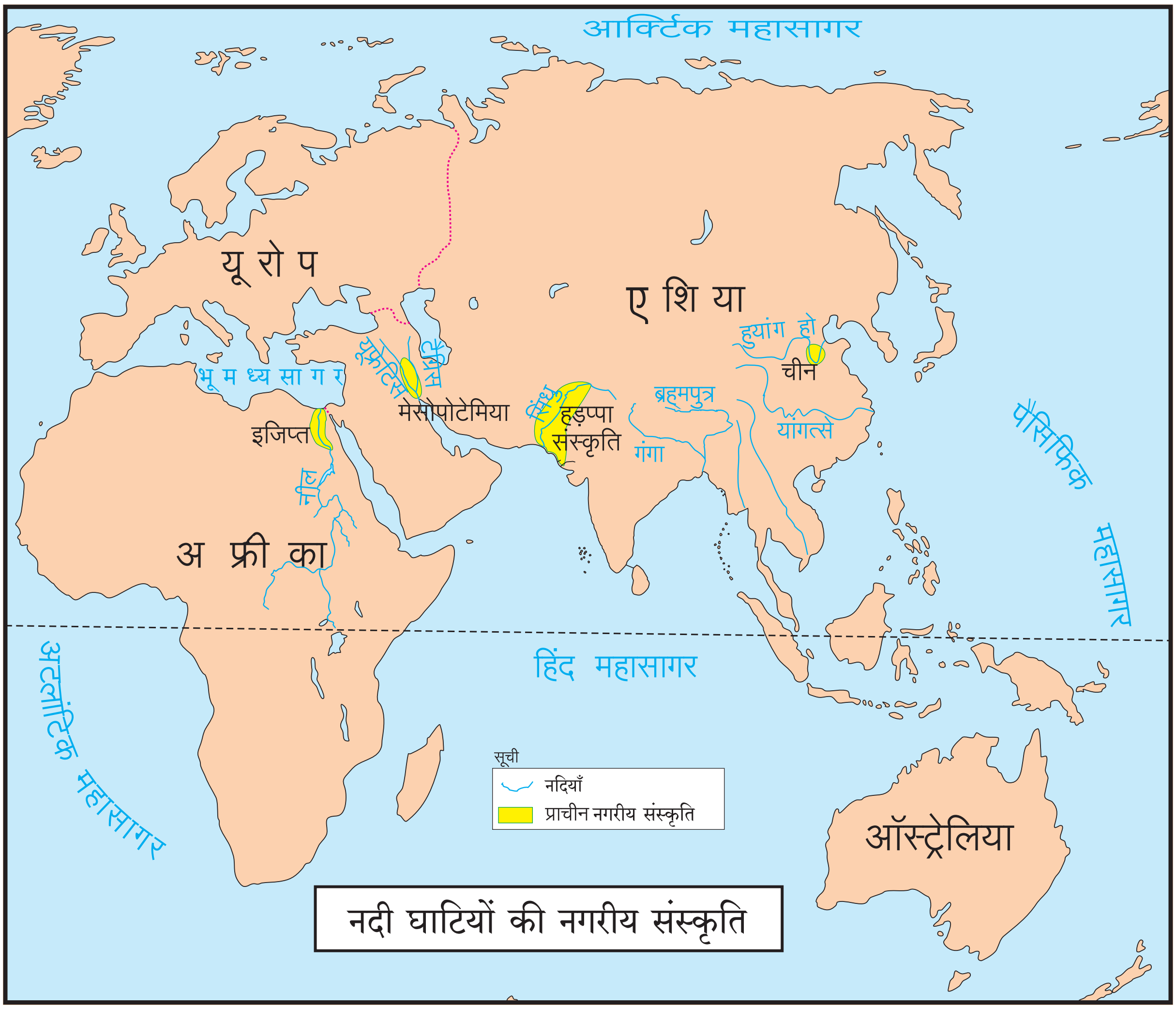

नदी घाटियों की नगरीय संस्कृति

विविध कौशलों के आधार पर उत्पादन में हुई वृद्धि, पहिये का किया गया उपयोग, व्यापार में आई हुई संपन्नता, विकसित लिपियों का किया गया उपयोग जैसी बातों से नवाश्मयुगीन संस्कृति में से नगरीय संस्कृति का उदय हुआ । विश्व के चार प्रदेशों में लगभग एक ही कालखंड में अर्थात ईसा पूर्व लगभग ३००० वर्ष पूर्व नगरीय संस्कृतियों का उदय हुआ । मेसोपोटेमिया, इजिप्त, भारतीय उपमहाद्वीप और चीन ये वे चार प्रदेश हैं । ये संस्कृतियाँ नदियों के तटों पर विकसित हुईं । अतः इन चारों प्रदेशों की प्राचीन नगरीय संस्कृतियों को 'नदी घाटियों की नगरीय संस्कृति' कहते हैं ।

१०.३ विभिन्न संस्कृतियाँ : मेसोपोटेमिया, इजिप्त, चीन, हड़प्पा

मेसोपोटेमिया : 'मेसोपोटेमिया' यह किसी देश का नाम नहीं है अपितु वह एक प्रदेश का नाम है । 'मेसोपोटेमिया' शब्द का अर्थ दो नदियों के बीच का प्रदेश अर्थात 'दोआब' होता है । प्राचीन मेसोपोटेमिया टैग्रिस और यूफ्रेटिस इन दो नदियों के बीच का प्रदेश है । ये दोनों नदियाँ प्रमुखतः तुर्कीस्तान, सीरिया और इराक देशों में से बहती हैं । मेसोपोटेमिया प्रदेश में उर, उरूक, निप्पुर जैसे प्राचीन नगर थे । इन नगरों में अत्यंत समृद्ध संस्कृति प्रचलित थी ।

इजिप्त : अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर में सहारा मरुभूमि के पूर्वी हिस्से में नील नदी बहती

है । इस नदी की घाटी में विश्व की एक समृद्ध प्राचीन नगरीय संस्कृति फली-फूली । वह इजिप्त की प्राचीन संस्कृति है । नील नदी में हर वर्ष वर्षाकाल में बाढ़ आती है । नील नदी अपने तटों पर काँप की मिट्टी लाकर भंडारण करती है; फलस्वरूप उसकी तटीय भूमि बहुत उपजाऊ बन गई है । इजिप्त की प्राचीन संस्कृति के लोग स्थान-स्थान पर छोटे बाँध बाँधकर नील नदी में आती बाढ़ के जल का संग्रह करते थे । बाढ़ के जल की मिट्टी नीचे बैठ जाने पर ऊपर के जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता था ।

चीन : चीन की हुयांग हो नदी की घाटी में चीन की नगरीय संस्कृति का विकास हुआ । चीनी परंपरा के अनुसार हुआंग दी नामक राजा ने कृषि, पशुपालन, पहियोंवाले वाहन, नौका, वस्त्र निर्माण आदि का प्रारंभ किया । लोग यह भी मानते हैं कि उसकी रानी ने रेशम का उत्पादन और रेशम को रँगने की तकनीक खोज निकाली । चीन के लोयांग, बीजिंग और चांगान नगर महत्त्वपूर्ण नगर थे ।

हड़प्पा संस्कृति : भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे प्राचीन संस्कृति 'हड़प्पा संस्कृति' इस नाम से जानी जाती है । यह संस्कृति सिंधु नदी की घाटी में विकसित हुई । इस संस्कृति के पंजाब में हड़प्पा और सिंध में मोहनजोदड़ो ये दो स्थान पहली बार प्रकाश में आए । अब ये स्थान पाकिस्तान में हैं । गुजरात में लोथल और धौलवीरा, राजस्थान में कालीबंगा ये इस संस्कृति के भारत में कुछ अन्य प्रसिद्ध स्थान हैं ।

इस संस्कृति में नगरों की संरचना अनुपातबद्ध थी । एक-दूसरे के समांतर और समकोण में काटने वाली सड़कों के चौकोन स्थान में मकान बनाते थे । अनाज के विशाल गोदाम, प्रशस्त मकान इन नगरों की विशेषताएँ थीं । धोवन जल के निपटारे हेतु नालियाँ, प्रत्येक घर में स्नानगृह, शौचालय जैसी स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतने वाली सार्वजनिक व्यवस्था थी । निजी और सार्वजनिक कुएँ थे; जो व्यवस्थित रूप से निर्मित किए गए थे । नगर के दो से चार स्वतंत्र विभाग होते थे । प्रत्येक विभाग स्वतंत्र परकोटे द्वारा रक्षित था ।

मिट्टी के पक्के, पकाए गए और खनखनाते बरतन हड़प्पा संस्कृति की विशिष्टता थी । इन बरतनों का रंग लाल है तथा उनपर पीपल

हड़प्पाकालीन सिक्के और मूर्ति

के पत्ते, मछलियों की चोईं के आकारों की आकर्षक नक्काशी बनाई होती थी । विभिन्न प्रकार के रंगीन पत्थरों से बनाए हुए मनके और काँसा धातु की वस्तुएँ बनाने में हड़प्पा संस्कृति के श्रमिक बहुत कुशल थे । मेसोपोटेमिया में इन वस्तुओं की बड़ी माँग थी । हड़प्पा संस्कृति के देवी-देवताओं के नाम यद्यपि ज्ञात नहीं हैं फिर भी वे लोग मातृदेवता और पशुपति की पूजा

सिंह का शिकार करता राजा

कुश्ती करते मल्ल (पहलवान)

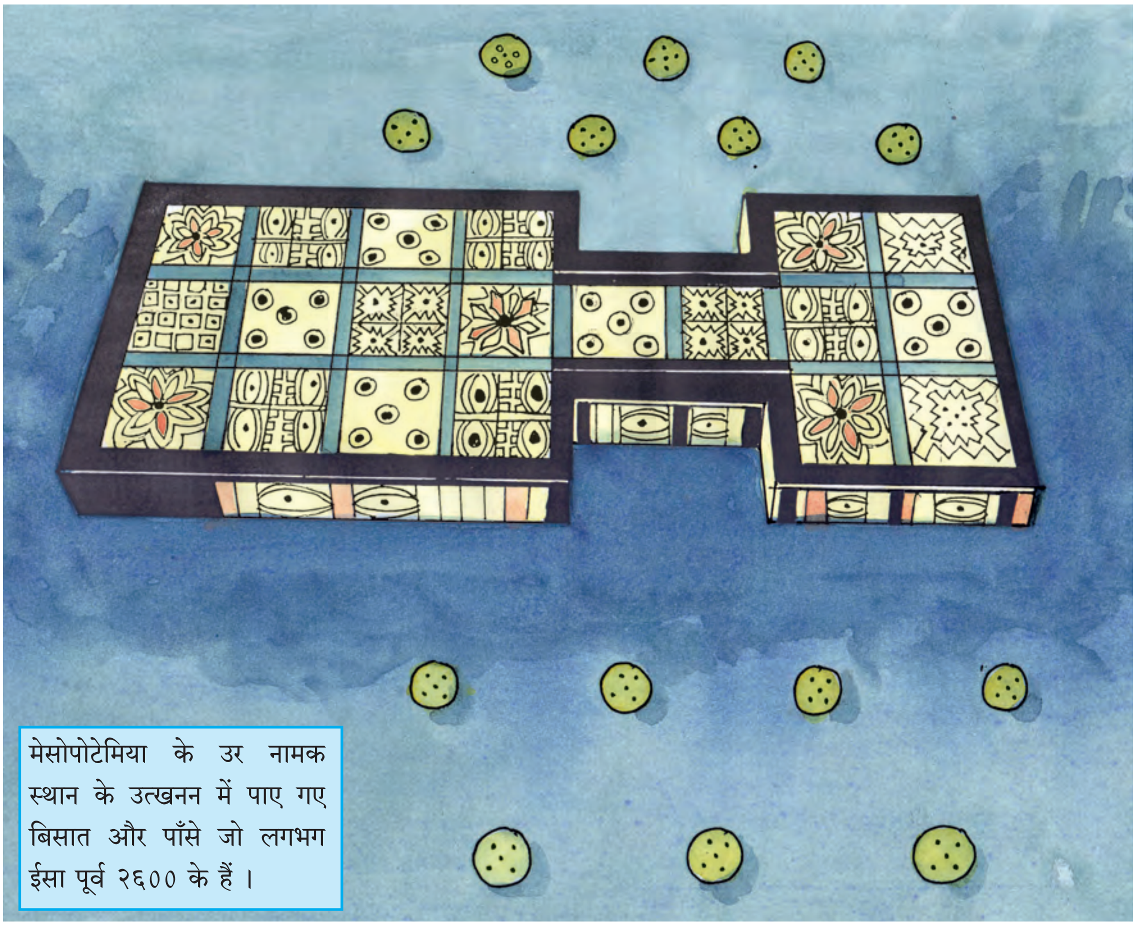

मेसोपोटेमिया के उर नामक स्थान के उत्खनन में पाए गए बिसात और पाँसे जो लगभग ईसा पूर्व २६०० के हैं ।

करते होंगे; ऐसा वहाँ पाई गईं मिट्टी की मूर्तियों और मुद्राओं के आधार पर माना जाता है ।

१०.४ खेल और मनोरंजन

प्राचीन नगरीय संस्कृतियों में खेल और मनोरंजन के विविध प्रकार थे । उनमें प्रमुखतः शिकार करना और कुश्ती (दंगल) ये दो खेल थे । इनके अतिरिक्त चौसर और शतरंज के खेल भी खेले जाते थे ।

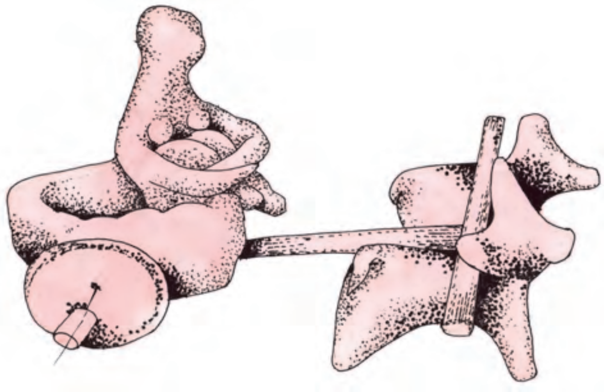

हड़प्पाकालीन खिलौना

हड़प्पा संस्कृति के विभिन्न स्थानों के उत्खनन में पाई गईं मिट्टी की ये वस्तुएँ पाँसों के रूप में उपयोग में लाई जाती थीं; ऐसा अनुमान कुछ पुरातत्वज्ञों का है ।

प्राचीन इजिप्त में शतरंज के समान 'सेनात' नामक एक लोकप्रिय खेल था जो बिसात और पाँसों के साथ खेला जाता था । प्राचीन चीन में भी बिसात और पाँसों की सहायता से खेले जाने के विविध प्रकार थे । मेसोपोटेमिया और हड़प्पा संस्कृति में भी बिसात और पाँसों के खेल लोकप्रिय थे ।

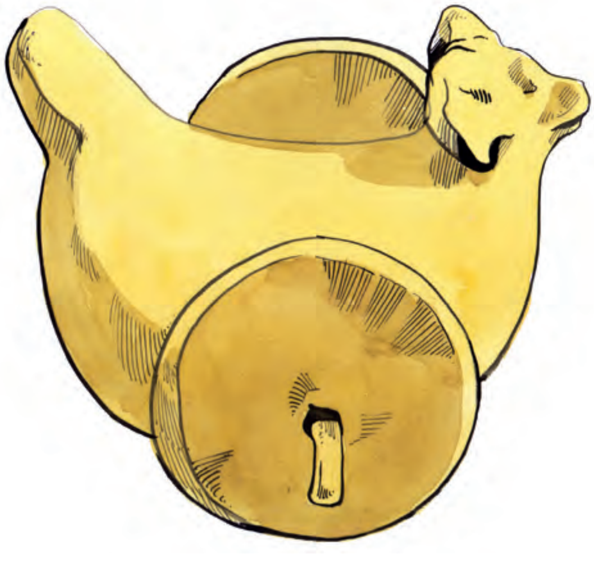

हड़प्पाकालीन खिलौना

हड़प्पा संस्कृति के विभिन्न स्थानों के उत्खनन में बच्चों के विविध प्रकार के खिलौने भी पाए गए हैं । उनमें मिट्टी की चक्करघिन्नियाँ, सीटियाँ, झुनझुने, बैलगाड़ियाँ, पहियोंवाले प्राणी और पक्षी जैसे खिलौनों का समावेश है ।

प्राचीन नगरीय संस्कृतियों में खेलों की भाँति संगीत और नृत्य को भी बहुत महत्त्व प्राप्त था । किसी भी उत्सव अथवा पर्व के अवसर पर संगीत और नृत्य का आयोजन अवश्य किया जाता

था । उस कालखंड में अनेक प्रकार के वाद्‌यों का उपयोग होता था । 'बालाग' नामक एक तंतुवाद्‌य मेसोपोटेमिया में प्रचलित था । सारंगी भी एक प्राचीन तंतुवाद्‌य है । इनके अतिरिक्त झाँझ, झुनझुने, बाँसुरी, ढोल जैसे विविध वाद्‌य बजाए जाते थे । इजिप्त के राजाओं को 'फैरो' कहते थे । विशिष्ट पर्वों के अवसरों पर स्वयं फैरो भी नृत्य में सम्मिलित होते थे । हड़प्पा संस्कृति में भी नृत्य को विशेष महत्त्व प्राप्त था; ऐसा अनुमान मोहनजोदड़ो के उत्खनन में प्राप्त नृत्यांगना की कांस्यमूर्ति के आधार पर कर सकते हैं ।

अश्म युग से प्रारंभ हुई मानवीय संस्कृति विकसित नगरीय संस्कृति के चरण तक किस प्रकार आ पहुँची; इसको हमने देखा । अगले वर्ष हम भारतीय उपमहाद्‌वीप में विकसित हुई हड़प्पा संस्कृति का विस्तृत अध्ययन करेंगे । इसी भाँति भारत के प्राचीन इतिहास का भी अध्ययन करेंगे ।

बालाग

मेसोपोटेमिया के 'उर' नामक नगर के उत्खनन में पाया गया स्वर्ण 'बालाग' । बालाग ११ तंतुओं का वाद्‌य है । इसकी ऊँचाई लगभग २.१ मी. है । इस वाद्‌य का कालखंड ईसा पूर्व लगभग २६५० था । चित्र में दिखाई देता बालाग वाद्‌य पुआबी नामक रानी की समाधि में से पाया गया है ।

स्वाध्याय

१. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(अ) नवाश्मयुगीन संस्कृति का विकास कहाँ हुआ ?

(आ) हड़प्पा संस्कृति के श्रमिक किन वस्तुओं को बनाने में कुशल थे ?

२. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(अ) हड़प्पा संस्कृति के नगरों की संरचना किस प्रकार की थी ?

(आ) नील नदी की तटीय भूमि बहुत उपजाऊ क्यों बनी ?

३. निम्न संकल्पना चित्र पूर्ण करो :

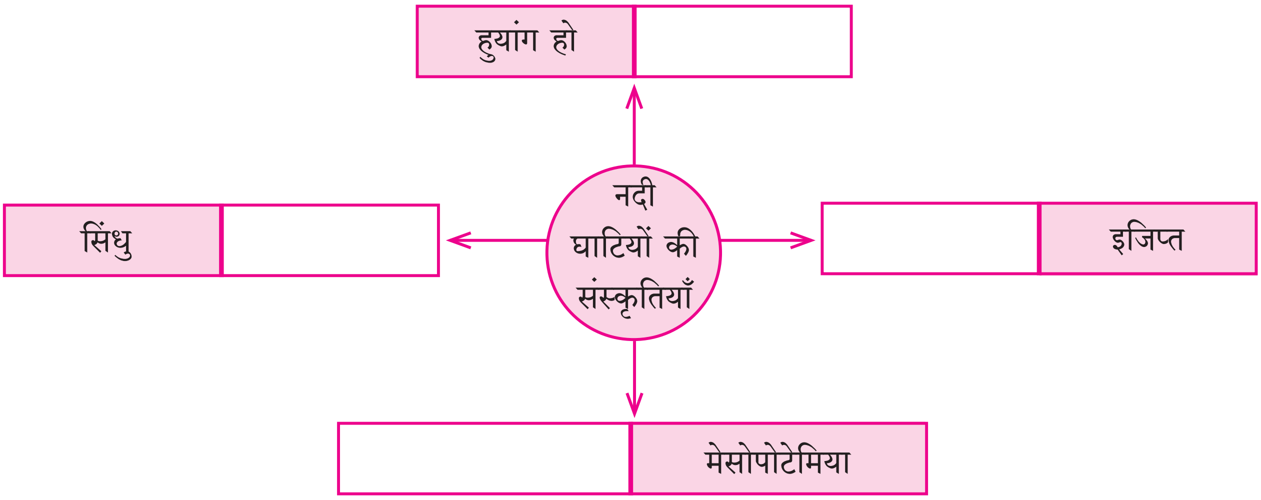

कार्य :

भारत के मानचित्र के ढाँचे में हड़प्पा संस्कृति के स्थान दिखाओ ।

उपक्रम :

(अ) अपने परिसर में विविध वाद्य बजाने वाले कलाकारों से मिलो और वाद्यों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

(आ) अपने परिसर के बुजुर्ग नागरिकों से मिलो और उनके समय के पारंपरिक खेलों की जानकारी प्राप्त करो ।

क्या तुम यह जानते हो ?

मेसोपोटेमिया में प्रचलित नगरीय संस्कृतियों में से चार महत्त्वपूर्ण संस्कृतियों के नाम इस प्रकार हैं : (१) सुमेरियन (२) एक्वेडियन (३) बैबोलोनियन (४) एसिरियन । ईसा पूर्व लगभग २३५० में अक्कड़ का साम्राज्य उदित हुआ । अक्कड़ के सम्राट सार्गन के कालखंड में हड़प्पा संस्कृति और मेसोपोटेमिया के बीच का व्यापार समृद्ध हुआ था । बैबीलोन नरेश हम्मुखी का कालखंड ईसा पूर्व १७९२ से १९५० के बीच था । हम्मुखी विश्व का प्रथम शासक है; जिसने अपनी प्रजा को लिखित सुव्यवस्थित कानून प्रदान किए ।

प्राचीन इजिप्त के लोगों ने जिन बातों को साध्य किया; उनमें से विशेष बात उनका भवन निर्माण विज्ञान है । वहाँ के पिरामिडों और मंदिरों की भव्यता के आधार पर हमें इसका विश्वास हो जाता है । उन्होंने भवनों के निर्माण के लिए मुख्य रूप से मिट्टी की कच्ची ईंटों और पत्थरों का उपयोग किया । गणित, चिकित्सा विज्ञान, सिंचाई पद्धति जैसे क्षेत्रों में उन्होंने बहुत प्रगति की थी । वहाँ उत्तम जलपोतों का निर्माण किया जाता था । नीले रंग की मुलम्मावाली मिट्टी की वस्तुओं का उत्पादन, पपायरस नामक वनस्पति से कागज बनाने की कला जैसे क्षेत्रों में भी वहाँ विशेष प्रगति हुई थी ।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो स्थानों का उत्खनन १९२१-२२ ई में प्रारंभ हुआ और हड़प्पा संस्कृति की खोज हुई । उत्खनन में सबसे पहले हड़प्पा संस्कृति प्रकाश में आई । अतः उसे 'हड़प्पा संस्कृति' नाम दिया गया ।

सिंधु नदी की घाटी में पाई गई हड़प्पा संस्कृति की लिपि में लिखे हुए लेख उपलब्ध हैं फिर भी उनको पढ़ने में अब तक सफलता प्राप्त नहीं हुई है । अतः उन लेखों का उपयोग उस संस्कृति का इतिहास जानने के लिए नहीं किया जा सकता परंतु हड़प्पा संस्कृति की अपनी एक विकसित लिपि थी और वह लिपि अन्य नगरीय संस्कृतियों के ही कालखंड में प्रचलित थी; इसे ध्यान में रखकर उस संस्कृति के कालखंड को भारतीय उपमहाद्वीप का 'इतिहासपूर्व कालखंड' कहा जाता है ।

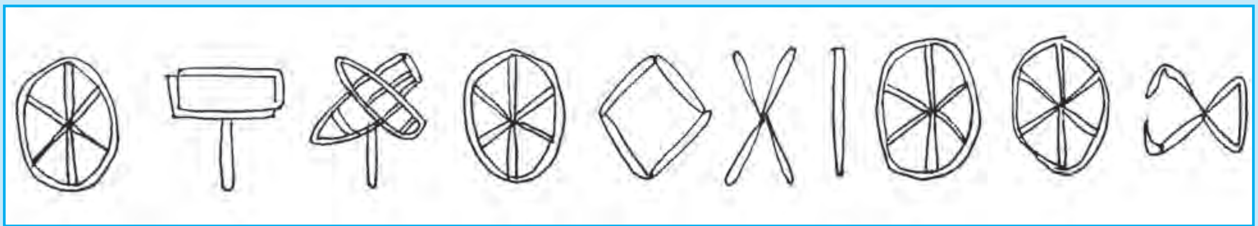

हड़प्पा लिपि में लेख

कुछ प्राचीन नगरीय संस्कृतियों की विशेषताएँ

१. नदी तटों पर कृषिप्रधान स्थायी आवास (बस्तियाँ) २. तांबा एवं कांस्य धातुओं का उपयोग ३. उन्नत तकनीकी ज्ञान और विशेष व्यावसायिक कौशलों पर आधारित व्यवसाय । ४. जलवितरण करने वाली केंद्रीय व्यवस्था, विकसित सिंचाई पद्धति ५. खाद्यान्न और अन्य वस्तुओं का नगर निवासियों की आवश्यकता से अधिक उत्पादन । ६. विकसित लिपि पर आधारित लेखन कला ७. दूर तक फैला व्यापार और उन्नत परिवहन - प्राणियों द्वारा खिंचे जाने वाले पहियेयुक्त वाहन, जलमार्ग का उपयोग ८. सुव्यवस्थित नगर संरचना - संरक्षक परकोटे, फर्शयुक्त (पक्की) सड़कें, अधिकारी वर्ग और सामान्य जन के अलग-अलग आवास । ९. उन्नत वास्तुशास्त्र और शिल्पकला । १०. गणित, खगोलविज्ञान और वैद्यक जैसी विज्ञान शाखाओं का विकास ।

❑❑❑

6NL4V7

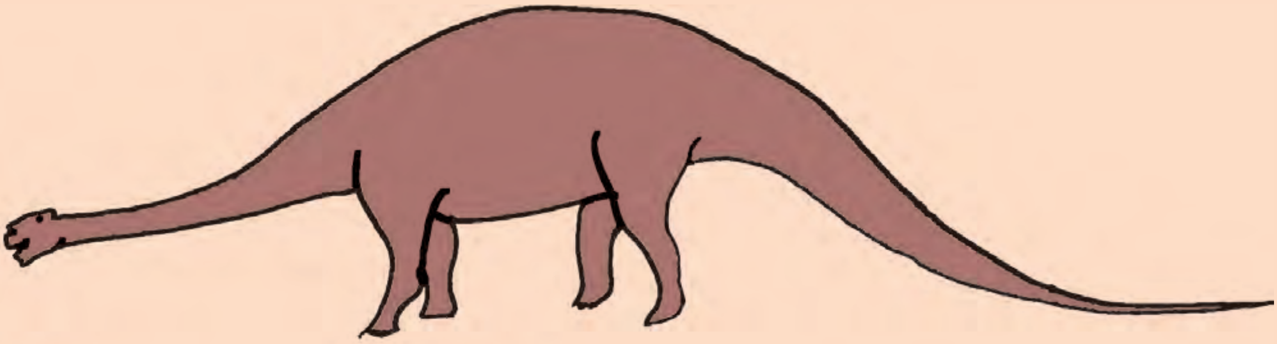
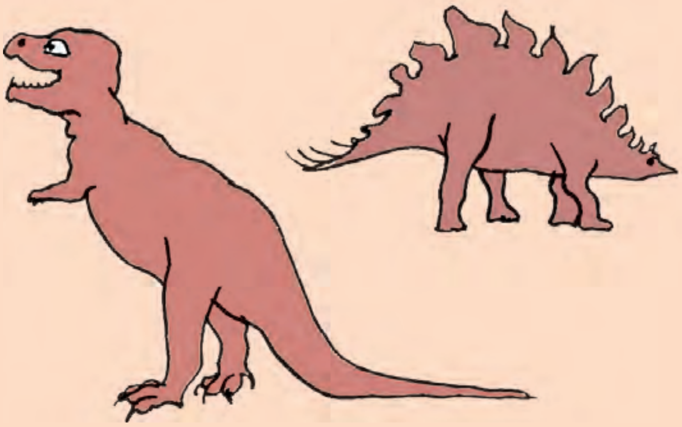

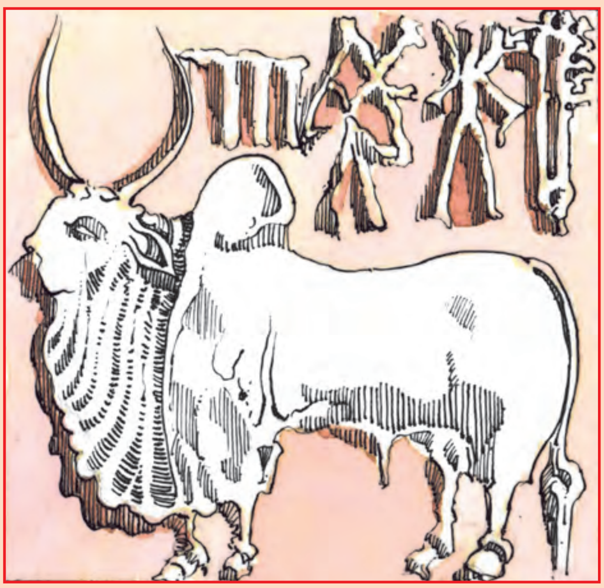

इयत्ता ५ वी, ८ वी शिष्यवृत्ती परीक्षा मार्गदर्शिका

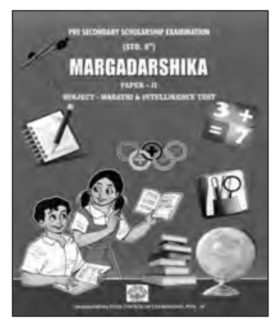

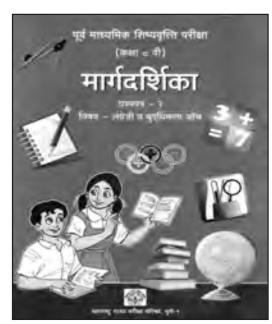

- मराठी, इंग्रजी, उर्दू, हिंदी माध्यमामध्ये उपलब्ध
- सरावासाठी विविध प्रश्न प्रकारांचा समावेश
- घटकनिहाय प्रश्नांचा समावेश
- नमुन्यादाखल उदाहरणांचे स्पष्टीकरण

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे –४११००४.

परिसर अभ्यास भाग – २ इ. ५ वी (हिंदी माध्यम)

₹ 28.00